Self Respect

08-08-2014

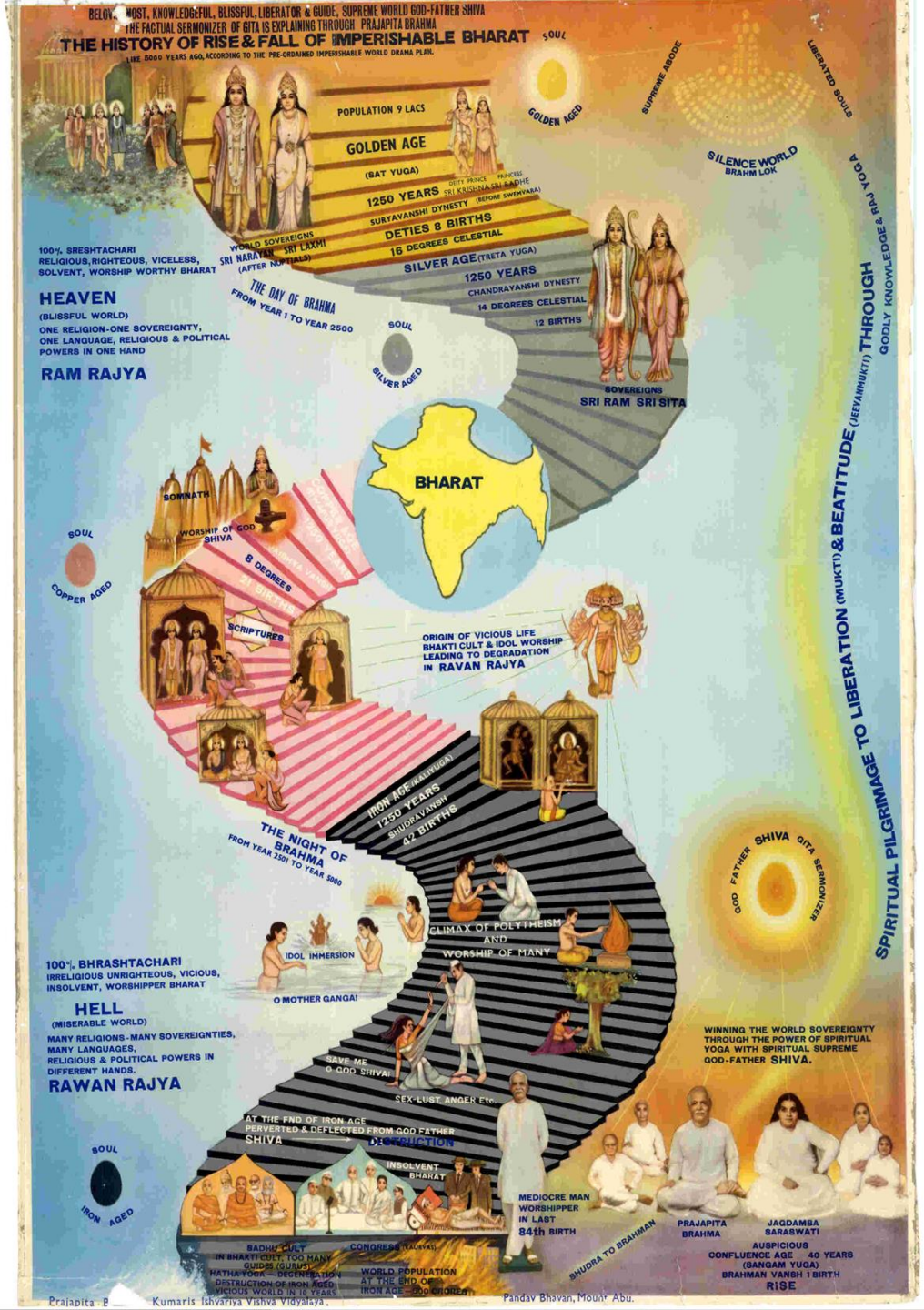

✓अनादि खेल है । कब शुरू हुआ यह नहीं कह सकते । अनादि चलता ही रहता है । यह भी तुम जानते हो और कोई नहीं जानता । तुम भी इस ज्ञान मिलने के पहले कुछ नहीं जानते थे । देवता भी नहीं जानते थे सिर्फ तुम पुरूषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण ही जानते हो फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जायेगा ।

✓बाप ने सुखधाम का मालिक बनाया बाकी और क्या चाहिए । बाप से जो पाना था, पा लिया बाकी कुछ पाने के लिए रहता नहीं । तो बाप समझाते हैं-बच्चे, तुम ही सबसे जास्ती पतित बने हो । पहले-पहले तुम ही आये हो पार्ट बजाने । तुमको ही पहले जाना पड़ेगा | चक्र है ना । पहले-पहले तुम ही माला में पिरोयेंगे ।

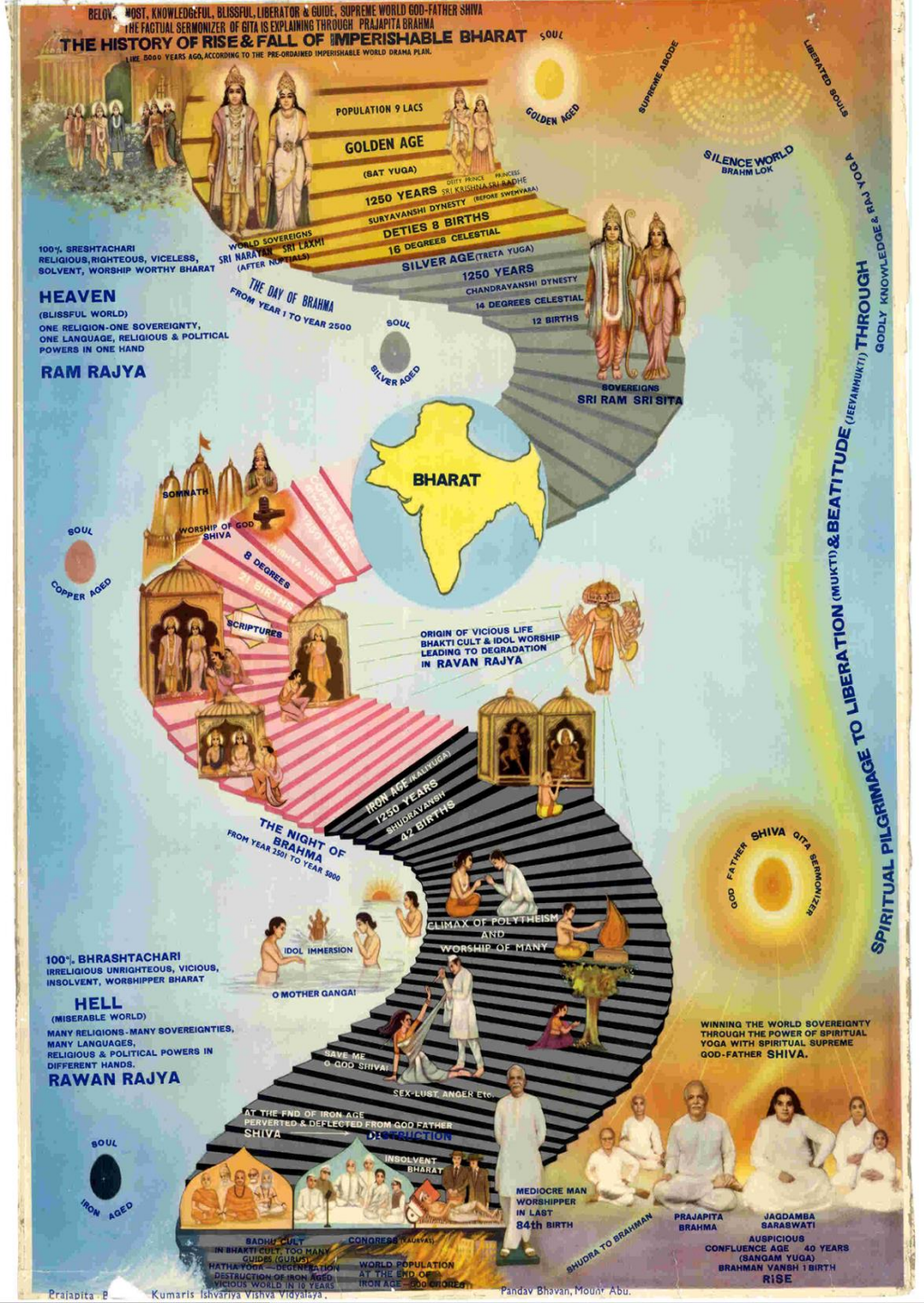

✓शिवबाबा को कितने ढेर बच्चे हैं । पहले-पहले तुम देवतायें आते हो । यह है बेहद की माला, जिसमें सब मणके मिसल पिरोये हुए हो । रूद्र माला और विष्णु की माला गाई जाती है ।

✓तुम तो जरूर बाप को याद पड़ेगे ही क्योंकि बाप आये हैं कल्याण करने के लिए । याद सबको करते हैं । परन्तु फिर भी बुद्धि फूलों तरफ ही चली जाती है । फूल अनेक प्रकार के होते हैं । कोई बिगर खुशबू भी होते हैं । बगीचा है ना । बाप को बागवान, माली भी कहते हैं ।

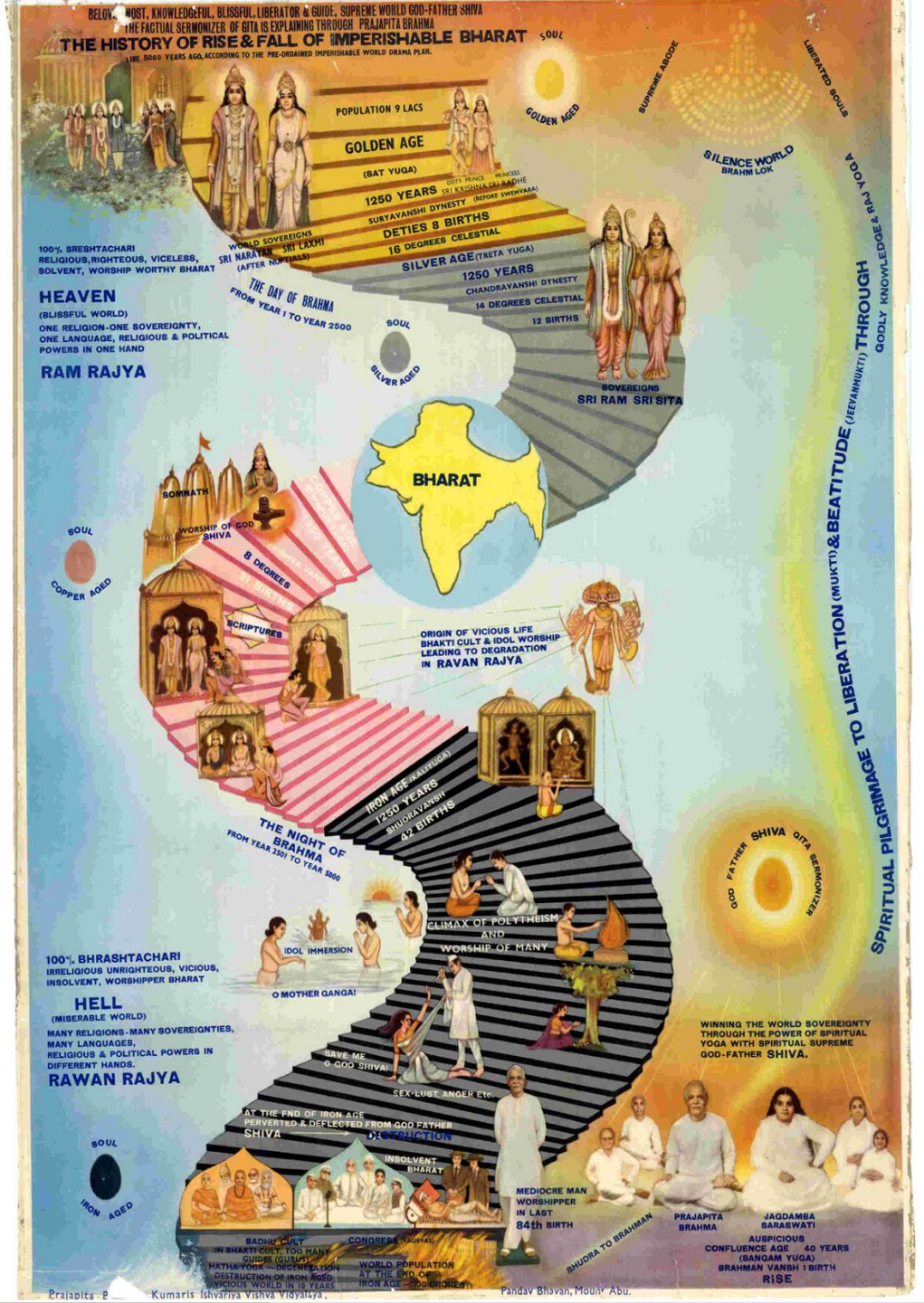

✓वहाँ यह मालूम नहीं पड़ता है कि इस पुरूषार्थ का यह फल है । अनेक बार तुम सतयुग में गये हो । यह चक्र फिरता रहता है । सतयुग-त्रेता है ज्ञान का फल । ऐसे नहीं कि वहाँ ज्ञान मिलता है । बाप आकर यहाँ भक्ति का फल ज्ञान देते हैं । बाप ने बताया है तुमने जास्ती भक्ति की है ।

✓रचना के आदि-मध्य- अन्त को याद करो तो चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे । भगवान् बच्चों को भगवान्- भगवती बनायेंगे ना ।

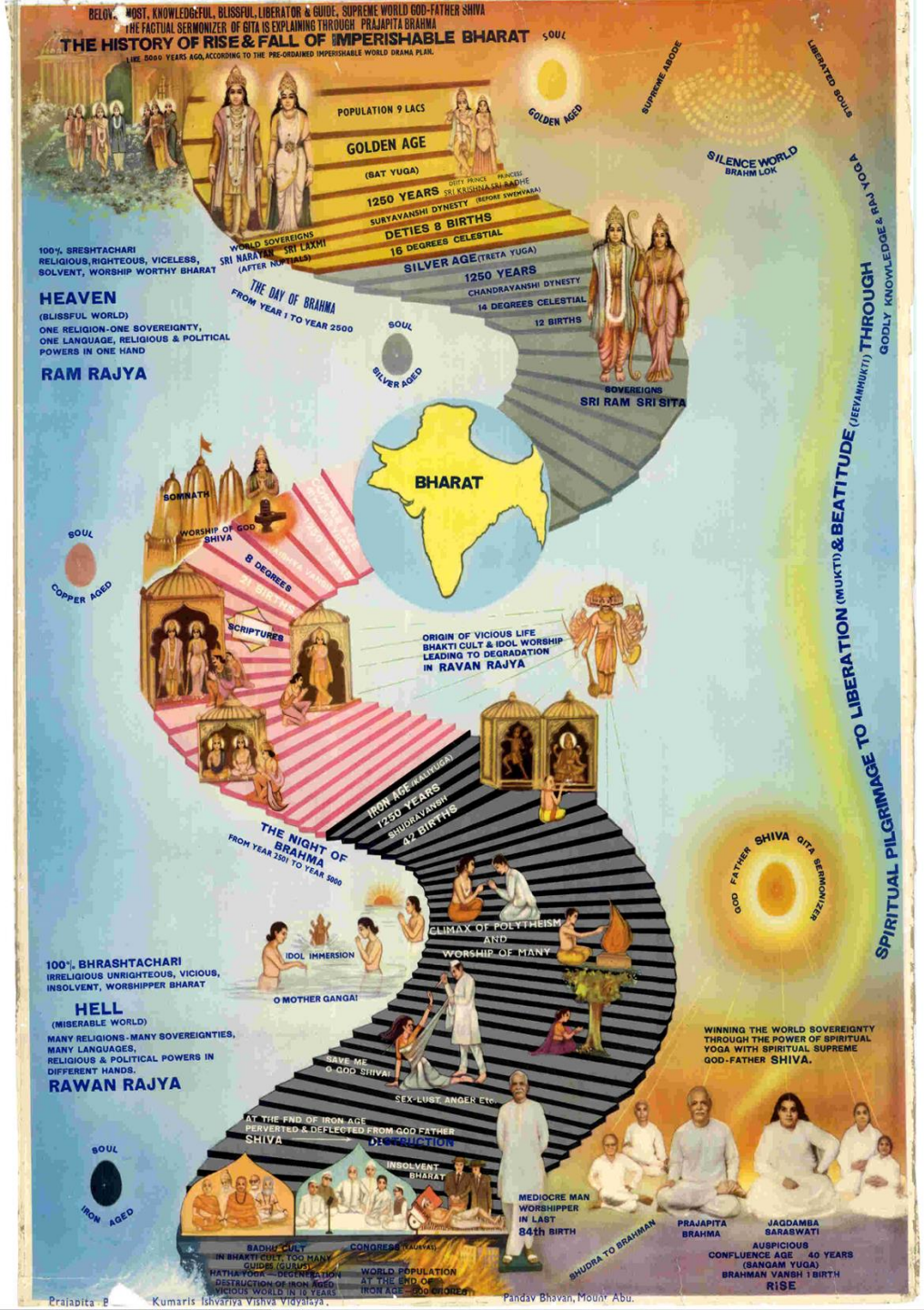

✓तुमको फरिश्ता बनना है, साक्षात्कार होता है, बाकी कुछ है नहीं ।

✓इस पुराने दु :खधाम को भूल जाओ । यह है बेहद का सन्यास बुद्धि से । उनका है हद का सन्यास । वह निवृत्ति मार्ग वाले प्रवृत्ति मार्ग का ज्ञान दे न सके । राजा-रानी बनना प्रवृत्ति मार्ग है । वहाँ है ही सुख ।

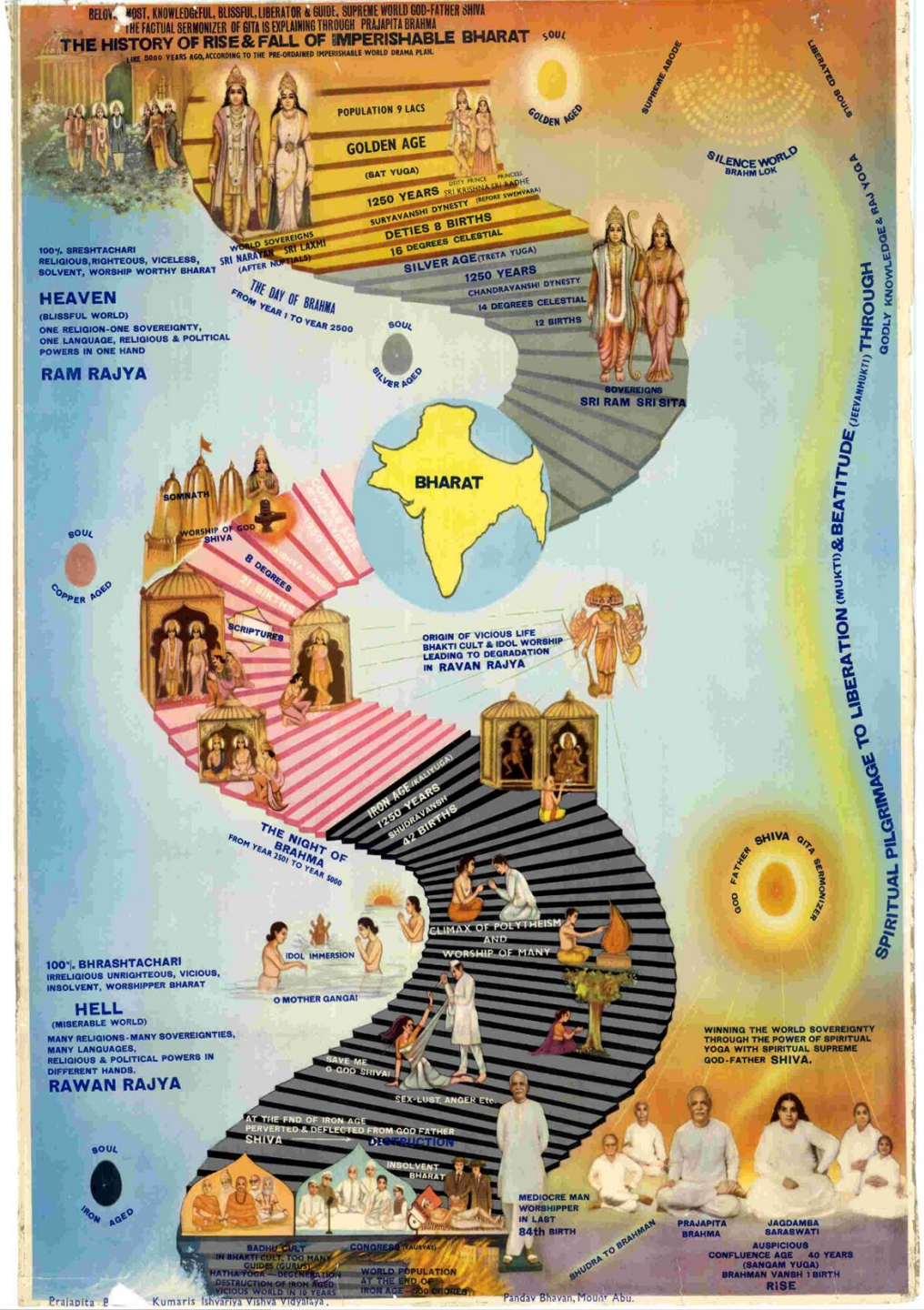

- ✓तुम बच्चे तो अभी अविनाशी ज्ञान रत्नों की लेन-देन करते हो । वे धर्मशाला आदि बनवाते हैं तो दूसरे जन्म में अच्छा फल मिलेगा । यह तो है बेहद का बाप । यह है डायरेक्ट, वह है इन डायरेक्ट ।
- ✓तुम भी जानते हो यह देवता बनेंगे । यह तो जड़ चित्र हैं । हम वहाँ चैतन्य बनेंगे । यह चित्र भी तुमने जो बनाये कहाँ से आये? दिन दृष्टि से तुम देख आये हो ।
- ✓तुम अनेक बार स्वर्ग के मालिक बने हो फिर माया ने हराया है । माया विकारों को कहा जाता है, न कि धन को ।

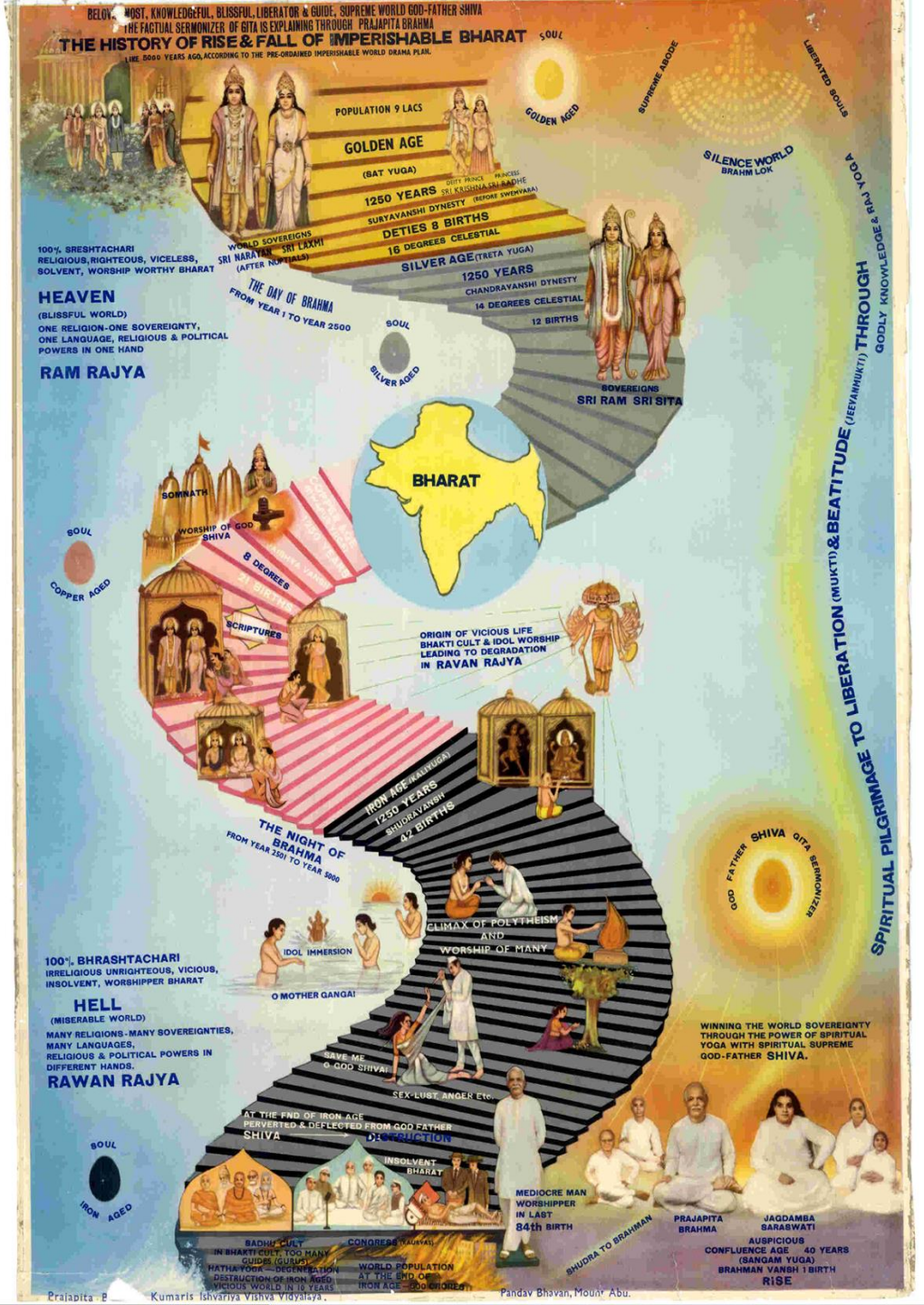

✓सोमनाथ के मन्दिर में कितना अकीचार धन था । कितना लूटकर ले गये । । बड़े-बड़े हीरे-जवाहर थे । अब तो देखने में भी नहीं आते, कटकुट हो गये । फिर हिस्ट्री रिपीट होगी । वहाँ सब खानियां तुम्हारे लिए भरपूर हो जायेंगी । हीरे जवाहर तो वहाँ जैसे पत्थर मिसल रहते हैं । बाप अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं, जिससे तुम अथाह धनवान बन जाते हो । तो मीठे-मीठे बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए । जितना पढ़ते रहेंगे, खुशी का पारा चढ़ता रहेगा ।

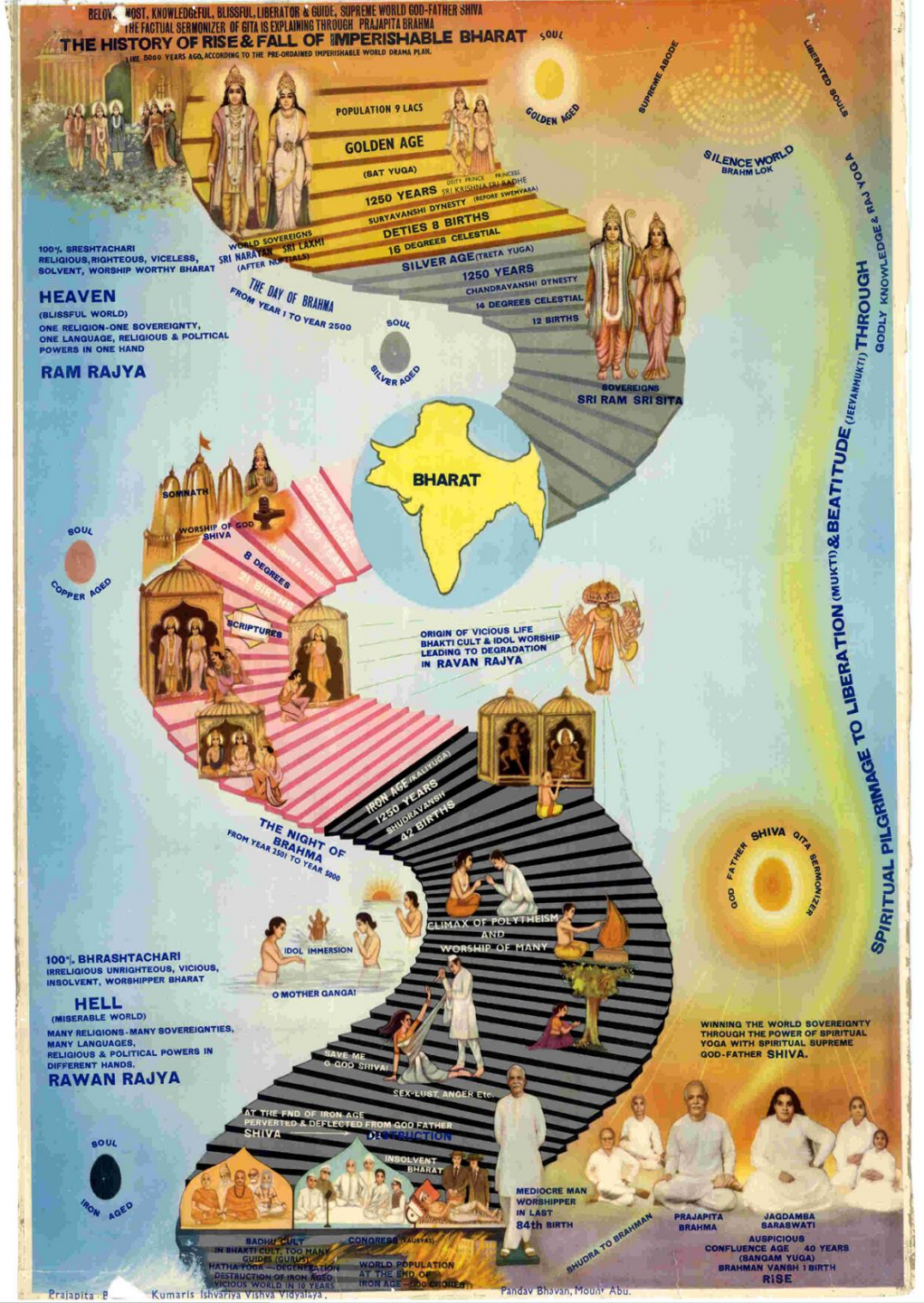

✓वरदान: रूहानी नशे द्वारा पुरानी दुनिया को भूलने वाले स्वराज्य सो विश्व राज्य अधिकारी भव !

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |